एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहब क़िब्ला ताबा सराह
अनुवादक – सैय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

एतराज

यह किया जा सकता है कि अगर यह मान लें कि पूरी दुनिया एक इशार–ए–''कुन'' (हो जा) के इशारा से पैदा हो गई तब तो यह माना जा सकता है कि सलीक़े और तरीक़े का पाया जाना पैदा करने वाले के हकीम और जानने वाला होने की दलील है। मगर डारोन और उनके हम ख़याल फ़लसफ़ियों का ख़याल जदलियत क़बूल करने के नतीजे में मौजूदा तरीक़े और सलीक़े का पाया जाना हकीम और अलीम पैदा करने वाले के मौजूद होने की दलील नही है क्योंकि इस ख़याल के मुताबिक़ नाक़िस चीज़ें ख़त्म होती रहती हैं, बेहतर और मुकम्मल चीज़ें बाक़ी रह जाती हैं और क्योंकि हमारे सामने ऐसी मुकम्मल चीज़ें हैं। इसलिए हमें हिकमतें और मसलहतें नज़र आती हैं वरना कायनात में ग़लत और नाक़िस चीज़ें भी थीं।

जवाब

डारोन के ख़याल को अगर ग़ौर से देखा जाय तो मालूम हो जाता है कि इस ख़याल का नतीजा सही और मुकम्मल चीज़ का बाक़ी रहना नहीं है जिसके लिए माहोल ठीक हो। वही चीज़ें बाक़ी रहती हैं जो अपने माहोल के हिसाब से ठीक हों जिसका नतीजा यह है कि अगर माहोल नामुकम्मल चीज़ों के लिए ठीक होगा तो नामुकम्मल चीज़ों को बाक़ी रहना चाहिए और अगर मुकम्मल चीज़ के लिए ठीक होगा तो उसे बाक़ी रहना चाहिए। फिर इस उसूल को किसने चलाया कि कायनात में वही चीज़ें रहना चाहिए जो मुकम्मल हों और नामुकम्मल चीज़ें ख़त्म हो जाएँ, क्या इसके लिए किसी हकीम और अक़्लमन्द ज़ात का होना ज़रूरी नहीं है? जिसकी पूरी तरह चाहत यह हो कि मुकम्मल चीज़ बाक़ी रहे।

कहा जाता है कि बदशकल और बदबूदार फूलों के कम होने और खुशबूदार और खूबसूरत फूलों के बढ़ने की वजह यह है कि परिन्दे और मक्खियाँ जो पेड़ों के रेज़ों के इधर–उधर ले जाने की वजह होती हैं वह अच्छे रंग वाले और खुशबूदार पौधों को ही पसन्द करती हैं सवाल यह है कि इन बेज़बानों की फितरत में यह खूबसूरती और अच्छाई की तरफ जाना किसने पैदा किया?

डारोन के फ़लसफे का एक हिस्सा यह भी है कि तरक़्क़ी का यह सफर न समझ में आने वाले तरीक़े से लाखों सालों की मुद्दत में धीरे–धीरे होता है लेकिन बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जिनमें इस तरह से धीरे–धीरे बदलाव का ख़याल नही किया जा सकता।

आप कह लीजिये कि पहला जानदार जो सुनने और समझने की ताक़त से ख़ाली था जब इसमें सुनने और समझने की ताक़त पैदा हुई तो क्योंकि

माहोल ठीक–ठाक था इसलिए बाक़ी रह गयी।

सवाल यह है कि सुनने और समझने का वह पेचीदा क़ानून जिसे देखेकर आज भी इन्सानी अक़्ल हैरान है, धीरे–धीरे लाखों साल के बदलाव से पैदा हुआ या अचानक, अगर अचानक हो गया तो यह एक हकीम और ख़बीर पैदा करने वाले की ख़बर देता है और अगर धीरे–धीरे हुआ तो शुरुआती ज़माने में जब अअ्साब ने इस ताक़त को हासिल करने के लिए पहला क़दम उठाया था उस वक़्त न तो जानदार को देखने की ताक़त मिली थी और न समझने की क्योंकि यह तो लाखों साल के बाद आयी। और उस वक़्त माहोल भी उसका ठीक नही था और न ही इससे कोई फायदा था। इसलिए इस्तेअ्माल भी न था और डारोन के हिसाब से जो चीज़ बेफ़ायदा हो वह ख़त्म होनी चाहिए और जब पहला क़दम बेफायदा और न सुने जाने के क़ाबिल होने की वजह से बाक़ी न रहेगा तो तरक़्क़ी का वह आख़री ज़ीना जो अब सुनने और समझने की शक्ल में है कैसे मिलेगा? मानना पड़ेगा कि यह ताक़तें अचानक सामने आयीं हैं और कोई जानने और समझने वाली ज़ात थी जिसने जानदार की ज़रूरत को देखकर यह ताक़त दे दी।

जानदार का वजूद

इससे इन्कार मुमकिन नही कि जानदार की शुरुआत जानदार से हुई, बेजान और बेरूह में यह खूबी नही है कि वह अपने में रूह और ज़िन्दगी पैदा कर सके हर जानदार की पैदाईश के लिए कोई माद्दा ज़रूरी है जो खुद जानदार हो। अगर यह माद्दा पेड़–पौधों से हो तो इससे पेड़–पौधे पैदा होंगे, जानवरों मे से हो तो जानवर, और इन्सानों से ताल्लुक़ रखता है तो इन्सान पैदा होंगे।

बहुत से माद्दे ठीक माहोल न मिलने की वजह से ख़ामोश और बेकार रह जाते हैं और ठीक माहोल मिलने पर बढ़ोत्तरी हासिल करके पेड़ या जानदार की शक्ल में सामने आ जाते हैं यह कीड़े–मकोड़े जो बारिश के एक छींटे से अपने आप उबल आते हैं उनके माददे मिट्टी में मसले होते हैं जो ठीक माहोल मिलते ही बढ़कर सामने आ गये। ज़िन्दगी को समझने वाले ओलमा का यह सही ख़याल है। यह भी सही है कि माद्दे की ज़िन्दगी के लिए एक ख़ास गर्मी की ज़रूरत होती है और तपिश 200 डिग्री तक पहुँच जाये तो किसी भी माद्दे का बाक़ी रहना बिलकुल मुमकिन नही है।

ज़मीन के लिये इस वक़्त का ख़याल यह है कि यह सूरज का टूटा हुआ एक टुकड़ा है जिसकी गर्मी शुरु में वही थी जो सूरज की है। धीरे–धीरे इसकी ऊपरी परत ठण्डी होना शुरु हुई और एक ज़माने के बाद इस क़ाबिल हुई कि कोई जानदार इस पर बाक़ी रह सके। सूरज की गर्मी 11 हज़ार फारन हाईट है इसलिए ज़मीन का भी यही रहा होगा इसलिए किसी जानदार का इतनी सख़्त गर्मी में पाया जाना मुमकिन ही नही है और आज जो हज़ारों तरह के जानवर ज़मीन पर पाये जाते हैं वह उस वक़्त न होंगे तो फिर ज़मीन पर ज़िन्दगी कैसे आयी? मानना पड़ेगा कि एक मुकम्मल इरादा और इख़्तियार रखने वाला, पैदा करने वाला है जो अपने इरादे से (जिसका मतलब क़ुर्आन मजीद में ''क़ुलिर्रूह मिन अम्रि रब्बी'' कह कर लफ़्ज़े अम्र से लिया गया है) बेजान चीज़ में जान डाल सकता है।

यह तो सब मानते हैं कि इस कायनात की कोई शुरुआत है। कायनात के पैदा होने से पहले **बक़िया पेज 14 पर ....**

करना अपना गर्व समझते, जिसकी ठोकर राज–मुकुट से खेलती, वह आज मनो मिट्टी के नीचे चला गया, साकार नमन हो गया। ज्ञान–स्तम्भ धराशायी हो गया।

वह साहित्यकार, ज्ञानी, समीक्षक, समालोचक, नेता, धर्मगुरु, शोध का सूत्रधार, अपनी शैली का रचयिता, पत्रकार, लेखनी की मर्यादा, समुदाय की शोभा, जन सहयागी, राष्ट्रप्रेमी, स्वतन्त्रता सेनानी और तौहीद अर्थात ऐकेश्वरवाद का संचारक अतीत में समा गया। अकबरपुर ने बड़ा ही अंधकार बिखेर दिया, देश अचेत है, संसार उदास है। अक्षर का जगत अनाथ हो गया। हम उसके शोक में डूबे हैं। हम उसकी पहचान न कर सके, उसका मूल्य न समझ पाये। शायद जगपुरुषों का यही भाग्य होता है। हाँ जाते–जाते वह अपने पिछड़े राष्ट्र और समुदाय की परीक्षा लेता गया। जनाधिकार के इस खुले हुए ध्वजवाहक, सामाजिक हीरो, समाजवाद के अग्रणीय नेता के दायित्व से हम कहाँ तक उन्मुक्त हो पाते हैं, समय ही बतायेगा। अभी तक तो घोर अन्धकार, निराशा और शून्य है। उदासीनता के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखायी देता।

फिर भी लेखनी अपने किसी प्रेमी को यूँ ही नहीं जाने देती, आज नहीं तो कल उसकी जय–जयकार करेगी :

क़लम आज उनकी ''जय'' बोल
अन्धा चका चौंध का मारा,
क्या जाने इतिहास बेचारा।
साक्षी उनकी महिमा के है,
सूर्य, चन्द्र, भुगोल, खगोल।
क़लम आज उनकी ''जय'' बोल।।

(बक़िया एक सबक़ इस्लाम से..........)

रुके हुए और खामोश और ठहरे हुए सितारे का होना माना जाए और कहा जाय कि इसमें किसी अचानक हादसे की वजह से हरकत हुई और दूसरे सितारे बनना शुरु हो गए लेकिन इसका जवाब क्या है कि खामोश और पुरसुकून माद्दे में अचानक हरकत आई कैसे? और वह धमाका क्यों हुआ जिसने एक जगह ठहरी हुई कायनात को हरकत में बदल दिया इस जगह पर अक़्ल परेशान हुई तो मज़हब का सहारा लेना पड़ा और मानना पड़ा कि हर माद्दे के पीछे भी कोई ताक़त है जिसने उसे हरकत दी और पैदाईश का चक्कर चलाया, ज़मीन पर लुढ़कते हुए पहिये को देखकर हम अन्दाज़ा लगा लेते हैं कि कोई हाथ था जिसने इसे हरकत दी थी चाहे वह हाथ हमें नज़र भी न आ रहा हो। इन्सान के बनाये हुए दर्जनों हवाई जहाज़ खुले आसमान में चक्कर लगा रहे हैं जिनमें कोई ड्राईवर नही है, तो क्या कह सकते हैं कि यह हमेशा से इसी तरह अपने आप हरकत में लगे हुए हैं! नहीं बल्कि मानते हैं कि एक हरकत देने वाली ताक़त ने उन्हें आसमान में पहुँचा कर एक चुनी हुई जगह पर चला दिया इस तरह अन्दाज़ा लगया जा सकता है कि एक ऐसी भरपूर ताक़त वाला हाथ है जिसने इस कायनात को तमाम सितारों के साथ हरकत में दिया है और पैदाइश के रास्ते पर डाला है इसी लिए तो क़ुर्आन ने कहा कि ''इन्न– इ–ल रब्बिक– मुन्तह–'' किसी भी रास्ते से जाओं तुम्हारी इन्तिहा रब ही पर होगी।